Roll No. ....

Total No. of Questions : 5] [Total No. of Printed Pages : 3

(2064)

M.A. (CBCS) IIIrd Semester Examination

9023

SANSKRIT

[भाषा-विज्ञान (सिद्धान्त)]

(Core)

Paper : MSKT-301

Time : 3 Hours] **[Maximum Marks : Regular : 80, Private : 100**

नोट :- सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. अधोलिखितानाम् अष्टानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषायामेव संक्षेपेण लिखन्तु–

   (क) भाषायाः परिभाषां संक्षेपेण प्रस्तुवन्तु।

   (ख) भाषावैशिष्ट्य-विषये संक्षेपेण लिखन्तु।

   (ग) भाषाध्ययनस्य पद्धतीन् वर्णयन्तु।

   (घ) उच्चारणविषये वाग्यन्त्रस्य उपयोगितां वर्णयन्तु।

(ङ) अखण्ड्य-स्वनिमप्रसंगे मात्राया: स्वरूपं प्रस्तुवन्तु।

(च) संगम: किम् ? उत्तरयन्तु।

(छ) वाक्यप्रकारान् संक्षेपेण वर्णयन्तु।

(ज) उद्देश्यविधेयं वर्णयन्तु। [2×8=16]

भाग—I [16×1=16]

2. किसी **एक** प्रश्न का विस्तृत उत्तर प्रस्तुत कीजिए—

(क) भाषा के विविध पक्षों को उपस्थापित करते हुए भाषा एवं वाक् के साम्य वैषम्य को केन्द्र में रखकर एक विस्तृत आलेख प्रस्तुत कीजिए।

(ख) भाषा का स्वरूप एवं कार्य इस शीर्षक के अन्तर्गत एक निबंध लिखिए।

भाग—II [16×1=16]

3. किसी **एक** प्रश्न का विस्तृत उत्तर प्रस्तुत कीजिए—

(क) स्वनिम का स्वरूप व परिभाषा प्रस्तुत करते हुए उसकी विशेषताओं को रेखांकित कीजिए।

(ख) स्वनिम के भेदों पर प्रकाश डालते हुए अखण्डय स्वनिम के अन्तर्गत आने वाले बलाघात एवं अनुनासिकता विषय पर विस्तार से प्रकाश डालिए।

भाग—III [16×1=16]

4. किसी **एक** प्रश्न का विस्तृत उत्तर प्रस्तुत कीजिए—

(क) स्वनप्रक्रियात्मक सिद्धान्तों का विस्तरेण वर्णन प्रस्तुत कीजिए।

(ख) स्वन-संस्वन-स्वनिम व स्वनिमिक विश्लेषण के सिद्धान्तों को रेखांकित कीजिए।

भाग—IV [16×1=16]

5. किसी **एक** प्रश्न का विस्तृत उत्तर प्रस्तुत कीजिए—

(क) वाक्य विन्यास के प्रमुख घटकों की विस्तार से चर्चा कीजिए।

(ख) वाक्य के गहन एवं बहिस्तलीय संरचना प्रकारों की विस्तार से चर्चा कीजिए।

खण्ड–IV

8. वैदिक संस्कृत की स्वन प्रक्रिया में व्याकरण का महत्त्व प्रतिपादित कीजिए।

अथवा

संस्कृत भाषा की संरचना में वेदमूलकता प्रमाणित कीजिए। [16]

Roll No. ....

Total No. of Questions : 8] [Total No. of Printed Pages : 4

(2064)

M.A. (CBCS) IIIrd Semester Examination

9024

SANSKRIT

(संस्कृत भाषा की संरचना)

(Core)

Paper : MSKT-302

Time : 3 Hours] [Maximum Marks : {Regular : 80, Private : 100}

नोट :- नियमित तथा पत्राचार के छात्रों के लिए प्रश्न-पत्र **80** अंक का है तथा प्राइवेट छात्रों के लिए **100** अंक निर्धारित हैं। परीक्षार्थियों को प्रत्येक खण्ड से **एक-एक** प्रश्न हल करना है। प्रथम प्रश्न वस्तुनिष्ठ है, उसके प्रश्नों का उत्तर अनिवार्य रूप से संस्कृत माध्यम से देना है।

1. अधोलिखिताः सर्वेऽपि प्रश्नाः संक्षिप्ततया संस्कृतेनैव साधनीयाः:–

   (i) किमिदं संस्कृतं नाम ?

(ii) कोऽयम् अनुस्वारः ?

(iii) केयम् अनुनासिकता ?

(iv) किं पदम् ?

(v) कोऽयं समासः ?

(vi) के सन्ति भूतकालिकाः कृदन्ताः ?

(vii) किमिदम् अव्ययम्

(viii) कोऽयं लौकिकः ? [2×8=16]

खण्ड–I

2. संस्कृत की स्वनप्रक्रिया में वाक्यस्वनों को विवेचित कीजिए।

अथवा

अनुनासिकता को सोद्धरण स्पष्ट कीजिए। [16]

3. स्वर-गुण की प्रकृति तथा प्रकार्य को स्पष्ट कीजिए।

अथवा

उच्चस्तरीय स्वनप्रक्रियात्मक घटकों का सोद्धरण संक्षिप्त विवेचन कीजिए। [16]

खण्ड–II

4. व्यञ्जन सन्धि के वर्गीकरणपूर्वक मुख्य अभिलक्षण को विवेचित कीजिए।

अथवा

पद-भेद सहित संज्ञाओं की विवेचना कीजिए। [16]

5. प्रातिपदिकों की संरचना में भावात्मक तथा क्रियात्मक कृदन्तों का महत्व बताइए।

अथवा

भाषायी संरचना में समासों का महत्व प्रतिपादित कीजिए। [16]

खण्ड–III

6. धातुओं की सोदाहरण प्रक्रिया लिखिए।

अथवा

मुक्त तथा साधित क्रियारूपीय गणों को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए। [16]

7. भाषा का वाक्य विन्यासात्मक परिचय दीजिए तथा कारकों की संयोजना कीजिए।

अथवा

पद-क्रम की विस्तृत व्याख्या कीजिए। [16]

Roll No. ....

Total No. of Questions : 5] [Total No. of Printed Pages : 3

(2064)

M.A. (CBCS) IIIrd Semester Examination

9025

SANSKRIT

[काव्यशास्त्र (काव्य प्रकाश 1-6 उल्लास)]

(Core)

Paper : MSKT-303

Time : 3 Hours] [Maximum Marks : Regular : 80, Private : 100

नोट :- सर्वे प्रश्नाः समाधेयाः। पूर्णाङ्कः **80** (नियमितछात्राणां कृते) नि: **100** (स्वतंत्रछात्राणां कृते) स्व:।

1. सर्वेऽपि वस्तुनिष्ठप्रश्नाः प्रत्येकम् एकैकवाक्येन समाधीयन्ताम्–

   (क) काव्यप्रकाशे दोषदर्शनो नाम कतम उल्लासः ?

   (ख) शिवेतरक्षतये इत्यत्र शिवेतरपदे कस्य ग्रहणम् ?

   (ग) अर्थबोधस्य कति प्रमुखसाधनानि ?

   (घ) स्फुटप्रतीयमानार्थरहितं काव्यं किम् ?

   (ङ) का आरोपिता शब्दशक्तिः ?

(च) अभिहितान्वयवादिनां मतेन अपदार्थोऽपि वाक्यार्थः किम् उच्यते ?

(छ) काव्यस्य अपकर्षकाः के: ?

(ज) मम्मटमते श्लेषः कतिविधि: ? 2×8=16[2½×8=20]

2. अधोलिखितासु कयोश्चित् **द्वयोः** कारिकयोः व्याख्या प्रस्तोतव्या–

(क) अतादृशि गुणीभूतव्यङ्ग्यं व्यङ्ग्ये तु मध्यमम्।

(ख) साक्षात् संकेतितं योऽर्थमभिधत्ते स वाचकः।

(ग) स मुख्योऽर्थस्तत्र मुख्यो व्यापारोऽस्याभिधोच्यते।

(घ) अनेकार्थस्य शब्दस्य वाचकत्वे नियन्त्रिते।
संयोगाद्यैरवाच्यार्थधीकृत् व्याप्रतिरञ्जनम्॥

8×2=16[10×2=20]

3. अधोलिखितयोः कश्चित् **एकः** प्रश्नः समाधीयताम्–

(क) आचार्यमम्मटदिशा काव्यहेतुः समीक्ष्यताम्।

(ख) काव्यप्रकाशानुसारं अभिहितान्वयवादः स्पष्टीक्रियताम्।

16×1=16[20×1=20]

4. अधोलिखितासु कयोश्चित् **द्वयोः** कारिकयोः व्याख्या क्रियताम्–

(क) वक्तृबोद्धव्यकाकूनां वाक्यवाच्यान्यसंनिधेः।
प्रस्तावदेशकालदेर्वैशिष्ट्यात् प्रतिभाजुषाम्।
योऽर्थस्यान्यार्थधीहेतुर्व्यापारो व्यक्तिरेव सा॥

(ख) तदाभासा अनौचित्यप्रवर्तिताः।

(ग) विभावा अनुभावास्तत् कथ्यन्ते व्यभिचारिणः।
व्यक्तः स तैर्विभावाद्यैः स्थायीभावो रसः स्मृतः॥

(घ) अगूढमपरस्याङ्गं वाच्यसिद्ध्यङ्गमस्फुटम्।
संदिग्धतुल्यप्राधान्ये काक्वाक्षिप्तमसुन्दरम्॥
व्यङ्ग्यमेवं गुणीभूतव्यङ्गस्याष्टौ भिदाः स्मृताः।

2×8=16[10×2=20]

5. अधोलिखितयोः कश्चित् **एकः** प्रश्नः समाधीयताम्–

(क) आचार्यमम्मटानुसारं ध्वनिकाव्यं निरूप्यताम्।

(ख) काव्यप्रकाशानुसारं गुणीभूतव्यङ्ग्यकाव्यस्य स्वरूपं समीक्ष्यताम्।

16×1=16[20×1=20]

Roll No. ....

Total No. of Questions : 5] [Total No. of Printed Pages : 3

(2064)

M.A. (CBCS) IIIrd Semester Examination

9026

SANSKRIT

[काव्य शास्त्र (काव्य प्रकाश 7-10)]

(DSE-I)

Paper : MSKT-304

Time : 3 Hours] [Maximum Marks : Regular : 80, Private : 100

1. अधोलिखितानां सर्वेषां प्रश्नानाम् उत्तरम् एकैक-वाक्यात्मकतया प्रदेयम्–

   (i) निहतार्थदोषः कीदृशो भवति ?

   (ii) अविमृष्टविधेयांशदोषः कीदृशो भवति ?

   (iii) कति वाक्यदोषा भवन्ति ?

   (iv) 'अकाण्डे प्रथनच्छेदौ' कस्मिन् दोषे भवतः ?

   (v) माधुर्यगुणस्य किं लक्षणम् ?

(vi) काव्यशोभायाः कर्तारो धर्मागुणा तदतिशय हेतवस्त्वलङ्काराः इति

कस्याचार्यस्योक्तिः ?

(vii) व्याजस्तुतिरलङ्कारस्य किं लक्षणम् ?

(viii) काव्यप्रकाशे अतिशयोक्तिरलङ्कारस्य कति प्रकाराः वर्णिताः ?

[8×2=16]

2. अधोलिखितासु कारिकासु केचिद् द्वे सनिदर्शनं व्याख्यातव्ये–

(क) सन्दिग्धमप्रतीतं ग्राम्यं नेयार्थमथ भवेत् क्लिष्टम्।

(ख) न्यूनाधिककथितपदं पतत्प्रकर्षं समाप्तपुनरात्तम्।

(ग) शुष्केन्धनाग्निवत् स्वच्छजलवत् सहसैव यः।

व्याप्नोत्यन्यत् प्रसादोऽसौ सर्वत्रविहितस्थितिः॥

(घ) योग आद्यतृतीयाभ्यामन्त्ययो रेण तुल्ययोः।

टादिः शषौ वृत्तिदैर्घ्यं गुम्फ उद्धत ओजसि॥ [2×8=16]

3. दोषलक्षण वर्णनपुरस्सरं सामान्यदोषाणां

नामपरिगणनं स्वरूपवर्णनञ्च कुरुत।

अथवा

गुणालङ्कारयोर्मध्ये पार्थक्यं प्रदर्शयत। [1×16=16]

4. अधोलिखितासु कारिकासु केचिद् द्वे सनिदर्शनं व्याख्यातव्ये–

(क) अर्थे सत्यर्थभिन्नानां वर्णानां सा पुनः श्रुतिः।

(ख) नियतानां सकृद् धर्मः सा पुनस्तुल्ययोगिता।

(ग) सम्भावनमथोत्प्रेक्षा प्रकृतस्य समेन यत्।

(घ) अभवन् वस्तुसम्बन्ध उपमापरिकल्पकः। [2×8=16]

5. अधोलिखितेषु केषाञ्चित् चतुर्णां लक्षणोदाहरणपूर्वकं स्वरूपं प्रतिपादयत–

(क) वक्रोक्तिः

(ख) अनन्वयः

(ग) प्रतिवस्तूपमा

(घ) विशेषोक्तिः

(ङ) रूपकम्

(च) काव्यलिङ्गम् [4×4=16]

Roll No. ....

Total No. of Questions : 5] [Total No. of Printed Pages : 3

(2064)

M.A. (CBCS) IIIrd Semester Examination

9027

SANSKRIT

[काव्यशास्त्र (साहित्य दर्पण 7-10)]

(DSE-II)

Paper : MSKT-304

Time : 3 Hours] [Maximum Marks : Regular : 80, Private : 100

नोट :- प्रश्न-पत्र में कुल **पाँच** प्रश्न दिए गए हैं। सभी प्रश्नों के उत्तर देने हैं। प्रश्न संख्या 1 वस्तुनिष्ठ है जिसका उत्तर संस्कृत भाषा में देना अनिवार्य है। नियमित तथा पत्राचार के छात्रों के लिए प्रश्न-पत्र **80** अंक का है तथा तो प्राइवेट छात्रों के लिए **100** अंक निर्धारित हैं।

इकाई–I

1. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर संस्कृत में लिखिए–

(क) दोष का लक्षण लिखिए।

(ख) ग्राम्यत्व अर्थदोष क्या है ?

(ग) माधुर्य गुण का लक्षण लिखिए।

(घ) गुण को परिभाषित कीजिए।

(ङ) आचार्य विश्वनाथ ने रीतियों के कितने भेद किए हैं ?

(च) लाटी रीति का लक्षण लिखिए।

(छ) अलंकार को परिभाषित कीजिए।

(ज) किन्हीं **चार** अर्थालंकारों के नाम लिखिए। 16[20]

इकाई—II

2. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** की ससंदर्भ व्याख्या कीजिए—

(क) त्यागः प्रसिद्धेरस्थाने न्यासः पदसमासयोः।

संकीर्णता गर्भितता दोषाः स्युर्वाक्यमात्रगाः॥

(ख) अतिविस्तृतिरंगस्य प्रकृतीनां विपर्ययः।

अर्थानौचित्यमन्यच्च दोषा रसगता मताः॥

(ग) ओजश्चित्तस्य विस्ताररूपं दीप्तत्वमुच्यते॥

वीरबीभत्सरौद्रेषु क्रमेणाधिक्यमस्य तु।

(घ) क्वचिद्दोषस्तु समता मार्गाभेदस्वरूपिणी।

अन्यथोक्तगुणेष्वस्या अन्तः पातो यथायथम्॥ 16[20]

इकाई—III

3. किन्हीं चार अर्थदोषों पर सोदाहरण प्रकाश डालिए।

अथवा

प्रसाद गुण के स्वरूप का प्रतिपादन कीजिए। 16[20]

इकाई—IV

4. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** ससंदर्भ की व्याख्या कीजिए—

(क) समासबहुला गौडी वर्णैः शेषैः पुनर्द्वयोः।

समस्तपंचषपदो बन्धः पांचालिका मता॥

(ख) अनुप्रासः शब्दसाम्यं वैषम्येऽपि स्वरस्य यत्।

छेको व्यंजनसंघस्य सकृतसाम्यमनेकधा॥

(ग) भवेत्सम्भावनोत्प्रेक्षा प्रकृतस्य परात्मना।

वाच्या प्रतीयमाना सा प्रथमं द्विविधा मता॥

(घ) हेतोर्वाक्यपदार्थत्वे काव्यलिङ्गं निगद्यते।....... 16[20]

इकाई—V

5. निम्नलिखित में से किन्हीं **चार** अलंकारों का लक्षण सोदाहरण लिखिए—

दीपक, रूपक, निदर्शना, विभावना, स्वभावोक्ति, करणमाला। 16[20]